SAARTHI · सारथी

करियर मार्गदर्शन पोर्टल · Career Guidance Portal

"सही मार्गदर्शन, उज्ज्वल भविष्य।"

करियर शीट · CAREER SHEET

Tribal Social Worker

जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ता वह पेशेवर है जो आदिवासी (जनजातीय) समुदायों के बीच ज़मीनी स्तर पर काम करता है — भील, मीणा, गरासिया, सहरिया जैसे समुदायों के साथ रहकर उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, महिला व बाल कल्याण और अधिकारों के...

इस करियर की पूरी जानकारी — स्कैन करें

वेतन, परीक्षा, कॉलेज, प्रवेश के रास्ते और आगे के कदम — सब पोर्टल पर।

career.gsssjethantri.in/#/career/tribal-social-worker

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जेठन्तरी

Govt. Sr. Sec. School, Jethantri · ब्लॉक समदड़ी · बालोतरा (Block Samdari · Balotra)

www.gsssjethantri.in · career.gsssjethantri.in

सुशील कुमार शर्मा
प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. जेठन्तरी · मास्टर ट्रेनर
Principal, GSSS Jethantri · Master Trainer

श्री चेनाराम चौधरी
प्रधानाचार्य, डाइट बाड़मेर
Principal, DIET Barmer

श्रीमती संघमित्रा
वरिष्ठ व्याख्याता, डाइट बाड़मेर (सहयोग)
Sr. Lecturer, DIET Barmer (Support)

भरत चौधरी
अभिकल्पना व विकास · व्याख्याता (इतिहास)
Designed & developed · Lecturer (History)

विशेष धन्यवाद · SPECIAL THANKS

सुरेन्द्र सिंह राठौड़
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. कानाना

सुरेश कुमार सैन
व्याख्याता (भूगोल) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

वनिता कुमारी
व्याख्याता (इतिहास) · रा.उ.मा.वि. रामसीन मूंगड़ा

कमलेश चौधरी
व्याख्याता (राजनीति विज्ञान) · रा.उ.मा.वि. टापरा

करियर मार्गदर्शन कार्यशाला, डाइट बाड़मेर (14–17 जुलाई 2026) में विकसित व लोकार्पित
Developed & unveiled at the Career Guidance Workshop, DIET Barmer (14–17 July 2026)

यह एक स्वतंत्र परियोजना है, जो सरकार की आधिकारिक करियर-मार्गदर्शन सामग्री पर आधारित है। · An independent project based on the Government's official career-guidance content.

1 यह करियर क्या है

जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ता वह पेशेवर है जो आदिवासी (जनजातीय) समुदायों के बीच ज़मीनी स्तर पर काम करता है — भील, मीणा, गरासिया, सहरिया जैसे समुदायों के साथ रहकर उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, महिला व बाल कल्याण और अधिकारों के प्रति जागरूकता के लिए प्रयास करता है। वह गाँव-गाँव जाकर सरकारी योजनाओं (राशन, पेंशन, वन अधिकार, पोषण, छात्रवृत्ति) को समुदाय तक पहुँचाता है, स्वयं सहायता समूह बनाता है, बच्चों को स्कूल से जोड़ता है और समुदाय की परंपरा व गरिमा का सम्मान करते हुए बदलाव लाता है। यह सेवा-भाव और सामाजिक न्याय से जुड़ा सार्थक करियर है, जिसमें आदिवासी समाज की अपनी भाषा, संस्कृति और आत्मनिर्भरता को केंद्र में रखा जाता है।

2 एक नज़र में

न्यूनतम योग्यता	12वीं पास; फिर बीएसडब्ल्यू/एमएसडब्ल्यू या समाजशास्त्र में स्नातक
कोर्स अवधि	बीएसडब्ल्यू 3 वर्ष + एमएसडब्ल्यू 2 वर्ष
आरंभिक वेतन	₹12,000–20,000/माह
कार्य-शैली	आदिवासी गाँवों में क्षेत्रीय (फील्ड) कार्य

3 क्या-क्या चाहिए

रुचियाँ

- आदिवासी समुदायों के साथ रहकर उनकी सेवा और सामाजिक न्याय में रुचि
- शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला-बाल कल्याण में सकारात्मक बदलाव लाने की चाह
- गाँव-गाँव घूमकर लोगों से जुड़ना और उनकी समस्याएँ सुनना पसंद

क्षमताएँ

- दूसरों के प्रति सहानुभूति और धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता
- कठिन क्षेत्रीय परिस्थितियों में लचीलापन और सहनशक्ति
- आदिवासी संस्कृति व परंपरा के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता

ज़रूरी कौशल

- समुदाय के साथ सहानुभूति और भरोसे का रिश्ता बनाना
- स्थानीय आदिवासी भाषा/बोली (भीली, वागड़ी आदि) समझना और बोलना
- स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा व अधिकारों पर जागरूकता व प्रशिक्षण देना
- समुदाय संगठन व स्वयं सहायता समूह बनाना (कम्युनिटी मोबिलाइज़ेशन)
- परियोजना प्रबंधन, रिपोर्टिंग और सरकारी योजनाओं की जानकारी
- समुदाय के साथ मिलकर सर्वेक्षण, दस्तावेज़ीकरण और डेटा संग्रह

4 कैसे पहुँचें

1. 12वीं कक्षा किसी भी संकाय (कला/विज्ञान/वाणिज्य) से पूरी करें।
2. सामाजिक कार्य में स्नातक (बीएसडब्ल्यू) या समाजशास्त्र/मानवशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञान में स्नातक करें।
3. बेहतर अवसरों के लिए सामाजिक कार्य में स्नातकोत्तर (एमएसडब्ल्यू) या ग्रामीण विकास/जनजातीय अध्ययन में विशेषज्ञता लें।
4. पढ़ाई के दौरान ही किसी आदिवासी क्षेत्र में काम करने वाली संस्था (एनजीओ) के साथ क्षेत्र-कार्य (फील्डवर्क) और इंटर्नशिप करें।
5. स्थानीय आदिवासी भाषा/बोली सीखें और समुदाय की संस्कृति व अधिकारों (वन अधिकार, पेसा) को समझें।
6. फील्ड वर्कर के रूप में शुरुआत करें और अनुभव के साथ परियोजना अधिकारी व कार्यक्रम प्रबंधक तक बढ़ें; सरकारी जनजातीय विकास विभाग की भर्ती परीक्षाओं में भी भाग लें।

प्रमुख परीक्षाएँ

- टिसनेट (TISS National Entrance Test) — एमएसडब्ल्यू/सामाजिक कार्य में प्रवेश हेतु
- विश्वविद्यालय स्तर की एमएसडब्ल्यू प्रवेश परीक्षा / सीयूईटी-पीजी

5 कहाँ से पढ़ें

सरकारी संस्थान

- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (सामाजिक विज्ञान संकाय / MSW) — उदयपुर, राजस्थान (https://mlsu.ac.in/Faculty-of-Social-Science)
- राजस्थान विश्वविद्यालय (सामाजिक कार्य / MSW) — जयपुर, राजस्थान (https://www.uniraj.ac.in/)
- टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS) – एमए सामाजिक कार्य (ग्रामीण विकास) — मुंबई / अखिल भारतीय (https://admissions.tiss.ac.in/)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) – बीएसडब्ल्यू/एमएसडब्ल्यू (दूरस्थ) — ऑनलाइन / निकटतम केंद्र (https://www.ignou.ac.in/)

निजी संस्थान

- इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आणंद (IRMA) – ग्रामीण प्रबंधन पीजीडीआरएम — आणंद, गुजरात (https://www.irma.ac.in/programmes/pgdrm-post-graduate-diploma-in-rural-management)
- निरमा विश्वविद्यालय / अन्य समाज कार्य विद्यालय — पश्चिम भारत (https://tiss.edu/)

ऑनलाइन

- इग्नू ऑनलाइन – सामाजिक कार्य कार्यक्रम — ऑनलाइन (https://www.ignou.ac.in/)
- स्वयं (SWAYAM) – सामाजिक कार्य व ग्रामीण विकास पाठ्यक्रम — ऑनलाइन (https://swayam.gov.in/)

फ़ीस

सरकारी विश्वविद्यालयों (मोहनलाल सुखाड़िया, राजस्थान विश्वविद्यालय, इग्नू) में बीएसडब्ल्यू/एमएसडब्ल्यू की फीस लगभग ₹5,000–25,000 प्रति वर्ष होती है, जो बहुत किफायती है। टिस जैसे प्रमुख संस्थानों में फीस अधिक (लगभग ₹1–2 लाख प्रति वर्ष) होती है, पर अनुसूचित जनजाति (एसटी) व आर्थिक रूप से कमज़ोर छात्रों के लिए छात्रवृत्ति व फीस छूट उपलब्ध है।

छात्रवृत्तियाँ

- जनजातीय मामलों के मंत्रालय – अनुसूचित जनजाति छात्रवृत्ति (पोस्ट-मैट्रिक) (https://tribal.nic.in/ScholarshiP.aspx)
- उच्च शिक्षा हेतु राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति फेलोशिप (https://fellowship.tribal.gov.in/)
- राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल (NSP) (https://scholarships.gov.in)
- राजस्थान सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग छात्रवृत्ति (https://sje.rajasthan.gov.in/)

6 काम कैसा होता है

कहाँ काम

आदिवासी बहुल गाँव व ज़िले (राजस्थान में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, उदयपुर, सिरोही), स्वयंसेवी संस्थाएँ (एनजीओ), सरकारी जनजातीय क्षेत्र विकास (टीएडी) विभाग, आँगनवाड़ी व स्वास्थ्य केंद्र, तथा फील्ड परियोजना कार्यालय।

कार्य-संस्कृति

काम मुख्यतः गाँवों और खेतों में, समुदाय के बीच होता है; अक्सर लंबी यात्रा, दूरदराज़ के इलाके और लचीले घंटे शामिल होते हैं। टीम व समुदाय के साथ मिलकर काम किया जाता है और आदिवासी परंपरा, त्योहारों व निर्णय-प्रक्रिया का सम्मान करना ज़रूरी है। महिलाओं के लिए भी इस क्षेत्र में सम्मानजनक अवसर हैं।

कौन नौकरी देता है

- आदिवासी क्षेत्रों में काम करने वाली स्वयंसेवी संस्थाएँ (जैसे वागधारा, सेवा मंदिर, आगा खान फाउंडेशन)
- सरकारी जनजातीय क्षेत्र विकास (टीएडी) विभाग व जनजातीय मामलों का मंत्रालय

- यूनिसेफ, यूएनडीपी व अन्य संयुक्त राष्ट्र एजेंसियाँ
- कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) फाउंडेशन व फंडिंग एजेंसियाँ
- ट्राइफेड (जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ) व आजीविका मिशन
- ज़मीनी स्तर की सामुदायिक व स्वयं सहायता समूह संस्थाएँ

माँग (2026)

भारत में लगभग 10.4 करोड़ आदिवासी आबादी है और सरकार व अनेक संस्थाएँ जनजातीय स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, वन अधिकार व आजीविका पर लगातार काम कर रही हैं, जिससे प्रशिक्षित जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ताओं की स्थिर माँग बनी रहती है। राजस्थान के दक्षिणी आदिवासी ज़िलों में एनजीओ, सीएसआर परियोजनाओं और सरकारी टीएडी विभाग में अवसर बढ़ रहे हैं। जो लोग स्थानीय भाषा और समुदाय को समझते हैं, उनके लिए यह क्षेत्र विशेष रूप से मूल्यवान है।

7 आगे बढ़ने का रास्ता

1. क्षेत्रीय कार्यकर्ता (फील्ड वर्कर) / सामुदायिक संगठक
2. परियोजना अधिकारी (प्रोजेक्ट ऑफिसर)
3. कार्यक्रम प्रबंधक (प्रोग्राम मैनेजर)
4. संस्था निदेशक / कार्यकारी निदेशक (एनजीओ डायरेक्टर)

कमाई

शुरुआत	₹12,000–20,000/माह
मध्य स्तर	₹25,000–45,000/माह
वरिष्ठ स्तर	₹60,000–1,20,000+/माह

कॉलेजदुनिया के अनुसार भारत में एक सामाजिक कार्यकर्ता की औसत आय लगभग ₹13,000–15,000/माह से शुरू होती है; ज़मीनी एनजीओ में शुरुआती वेतन साधारण रहता है। अनुभव, एमएसडब्ल्यू डिग्री और परियोजना प्रबंधन कौशल के साथ आय काफी बढ़ती है — प्रतिष्ठित एनजीओ, सीएसआर व यूनिसेफ/यूएन जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों में कार्यक्रम प्रबंधक व निदेशक अच्छा वेतन पाते हैं। सरकारी जनजातीय विकास विभाग की नौकरी में वेतनमान और स्थिरता दोनों बेहतर होते हैं।

8 अच्छी बातें · चुनौतियाँ

अच्छी बातें

- आदिवासी समुदाय की सेवा और सामाजिक न्याय से जुड़ा सार्थक व सम्मानजनक काम
- एनजीओ, सरकार, यूएन व सीएसआर — कई क्षेत्रों में करियर के अवसर
- फील्ड वर्कर से कार्यक्रम प्रबंधक व निदेशक तक बढ़ने का साफ़ रास्ता

चुनौतियाँ

- दूरदराज़ के इलाकों में यात्रा, कठिन परिस्थितियाँ और लंबे घंटे
- शुरुआती स्तर पर वेतन सीमित हो सकता है
- परियोजना-आधारित (प्रोजेक्ट) नौकरियों में फंडिंग पर निर्भरता

9 असल ज़िंदगी की कहानियाँ

Jayesh Joshi
संस्थापक, वागधारा — दक्षिणी राजस्थान के आदिवासी समुदायों के लिए सामाजिक कार्यकर्ता

जयेश जोशी ने वर्ष 2001 से बांसवाड़ा (राजस्थान) को केंद्र बनाकर भील आदिवासी समुदाय के साथ ज़मीनी स्तर पर काम शुरू किया और 'वागधारा' संस्था खड़ी की, जो आज राजस्थान, मध्य प्रदेश व गुजरात के आदिवासी अंचल में सक्रिय है। उन्होंने 5,000 जनजातीय विकास स्वयंसेवकों का नेटवर्क और 26 स्वशासन संगठन बनाए, 'पोषण स्वराज अभियान' के ज़रिए 67,000 बच्चों तक पोषण पहुँचाया, 53,200 आदिवासी बच्चों की शिक्षा तक पहुँच बेहतर की और हज़ारों परिवारों को खेती व पोषण-बगिया से आजीविका दी। गांधीवादी सोच और आदिवासी पारंपरिक ज्ञान को जोड़ते हुए उनका काम दिखाता है कि एक जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ता समुदाय की गरिमा का सम्मान करते हुए स्थायी बदलाव ला सकता है।

Jayesh Joshi / Vaagdhara · https://jayeshjoshi.in/about/

Chami Murmu
आदिवासी सामाजिक कार्यकर्ता व महिला सशक्तिकरण नेता, झारखंड (पद्म श्री 2024)

झारखंड के एक साधारण आदिवासी परिवार में जन्मीं चमी मुर्मू ने पिता के निधन के बाद कक्षा 10 के बाद मज़दूरी करके परिवार संभाला, पर हार नहीं मानी। उन्होंने 1996 में 'सहयोगी महिला' संगठन बनाया और लगभग 2,800 स्वयं सहायता समूहों के ज़रिए 500 से अधिक गाँवों की करीब 30,000 ग्रामीण व आदिवासी महिलाओं को पशुपालन, खेती व छोटे उद्यमों से आत्मनिर्भर बनाया, साथ ही महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, एनीमिया रोकथाम और जल-संरक्षण पर काम किया व 30 लाख से अधिक पेड़ लगाए। उनके इस योगदान के लिए उन्हें 2019 में नारी शक्ति पुरस्कार और 2024 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। उनकी यात्रा हर उस लड़की के लिए प्रेरणा है जो आदिवासी समुदाय के लिए सामाजिक कार्य में आगे बढ़ना चाहती है।

The Logical Indian · https://thelogicalindian.com/jharkhands-lady-tarzan-chami-murmu-plants-over-3-million-trees-empowers-30000-rural-women/

10 अगर यह रास्ता न बने तो

एक परीक्षा या एक प्रयास से रास्ता बंद नहीं होता। इन्हीं विषयों से ये रास्ते भी खुलते हैं — इनमें प्रवेश आमतौर पर आसान होता है और आगे चलकर इसी क्षेत्र में लौटा जा सकता है।

- जनजातीय संपर्क अधिकारी
- जनजातीय पर्यावरण संरक्षण अधिकारी
- जनजातीय विधिक अधिवक्ता

11 स्रोत व आगे पढ़ें

1. राजस्थान करियर गाइडेंस – जनजातीय सामाजिक कार्यकर्ता — https://cg.rajasthan.gov.in/careerguidance/hi/career/%e0%a4%9c%e0%a4%a8%e0%a4%9c%e0%a4%be%e0%a4%a4%e0%a5%80%e0%a4%af-%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%9c%e0%a4%bf%e0%a4%95-%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%95%e0%a4%b0%e0%a5%8d/

2. जनजातीय मामलों का मंत्रालय – छात्रवृत्ति योजनाएँ — https://tribal.nic.in/ScholarshiP.aspx

3. टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS) – एमएसडब्ल्यू प्रवेश — https://admissions.tiss.ac.in/

4. कॉलेजदुनिया – सामाजिक कार्यकर्ता वेतन (भारत) — https://collegedunia.com/courses/master-in-social-work-msw/social-worker-salary-in-india

5. ट्राइफेड – राजस्थान (जनजातीय विकास) — https://trifed.tribal.gov.in/en/Rajasthan

और 770+ करियर — पूरा पोर्टल

रुचि व योग्यता परीक्षण, सरकारी नौकरियाँ, कौशल पाठ्यक्रम, बायोडाटा बनाने की सुविधा — सब मुफ़्त, बिना लॉगिन, इंटरनेट के बिना भी।

career.gsssjethantri.in